I J R S S I S,Issue (VIII), Vol. II, Jan 2023 : 557-561
A Double-Blind Peer Reviewed Journal
OPEN ACCESS
e-ISSN 2347 – 517X
Original Article

Reg. No. : MH-NGP/0000167

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCE AND INFORMATION STUDIES

© VMS RESEARCH FOUNDATION www.ijrssis.in

ममता कालिया द्वारा रचित 'प्रेम कहानी' उपन्यास में वर्णित समस्याओं का आकलन

पूनम सु. देबनाथ सुनिता पं. बनसोड
सरदार पटेल महाविद्यालय गंजवार्ड, चंद्रपूर
हिन्दी विभाग सरदार पटेल महाविद्यालय, चंद्रपूर
*Corresponding Author :- poonamsdebnath@gmail.com, drsunitabansod@gmail.com

Communicated : 02.01.2023 | Revision :08.01.2023 Accepted : 15.01.2023 | Published: 27.01.2023

सारांश :–
आधुनिक हिन्दी साहित्यकारो में श्रीमती ममता कालिया जी विशेष उल्लेखनिय है। उनके कथा साहित्य में नित्य नए विषयो के माध्यम से समाज के संम्मुख एक ऐसे चुनौतीका निर्माण कीया जाता है जहा मानव मन के हदयतल को झंकृत कर उसे नविन कल्पनाओ से सराबोर होने के लिए विवश कर देता है। समाज में घटीत समस्याओ को पहचानकर उनकी जडो तक पहुच, उसमे सुधारना कर एक सुदृढ समाज की निर्मीती करना ममता जी के साहित्य का मुल उद्येश्य होता है।

प्रस्तुत उपन्यास 'प्रेम कहानी' मे उन्होने कई समस्याओ को उजागर कीया है। जैसे प्रेमविवाह के दुष्परिणाम, परिवार द्वारा तय किए गए विवाह के दोष, घुसखोरी के चलते अन्यायपुर्ण व्यवस्था, कालाबाजारी के विघातक परिणाम एवं शोषीत समाज की व्यथा जैसे कई समस्याओ को लेकर समाज का व्यवस्थित रुप प्रस्तुत किया गाया है। समस्याओ के साथ उनके निराकरण भी अवश्य होते है। जिसकी सफल अभिव्यंजना कर एक सुदृढ समाज की निर्मीती के उद्येश्य से ममता कालीया जी का उपन्यास समाज को एक नई दिशा निर्दीष्ट करवाते है।

बिजशब्द : हृदयतल, झंकृत, सुदृढ, निर्दीष्ट, सराबोर, अन्यायपूण.

प्रस्तावना :

आदिकाल से ही साहित्य सृजन का मुख्य उद्येश्य समाज कल्याण रहा है।समाज में व्याप्त समस्याओं के निराकरण हेतु साहित्य सदैव भिन्न–भिन्न प्रकार के मार्ग प्रशस्त करवाते है, जिसकी सहायता है समाज में फैले अंधविश्वास, कुरीतियों, पाखंडएवं आडंबरों के विरूद्धजाकर एक सशक्त एवं सुंदर समाज की निर्मिति की जा सके।आज तक कई समाज सुधारक आए और विभिन्न आंदलनों द्वारासमाज मे नवीन चेतना का प्रवाह भर गए। स्त्री शिक्षा का प्रारंभ महात्मा ज्योतिबा फुले जी द्वारा चलाए गए बडे आंदोलन का ही परिणाम है की आज स्त्रियॉ विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही है। साहित्यकार श्रीमती ममता कालिया जी भी उन्ही साहित्यकारों में से एक है जो समाज में व्याप्त समस्याओं के प्रति ना केवल चिंतित है बल्की उन समस्याओं के मूल मे जाकर उन्हे पूर्णत: समाप्त करने के उद्देश्य से निरंतर ऐसे कथा साहित्य की निर्मिती कर रही है जो समाज को एक नई दिशा निर्दिष्ट कराने मे उपयोगी सिद्ध हो। उनके उपन्यास 'प्रेम कहानी' में वर्णित कई समस्याएॅ आमतौर पर समाज में घटित होती हुई दिखाई देती है। जिनका सामाजिक धरातल पर अध्ययन कर

उनके विघटित परिणामों की ओर भी ममता जी ने संकेत प्रस्तुत किए है। प्रस्तुत लेख उन प्रत्येक समस्याओं का आकलन प्रस्तुत करता है।

विषय विस्तार

ममता कालिया जी द्वारा रचित प्रत्येक उपन्यास किसी न किसी समस्या की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित कर समाज में व्याप्त समस्याओं के निर्मूलन हेतू मार्ग प्रशस्त कराते है। उनके उपन्यास 'प्रेम कहानी' मे वर्णित समस्याएँ निम्न प्रकार से है—

प्रेम विवाह की समस्याएँ—

उपन्यास 'प्रेम कहानी' की नायिका 'जया' उच्चशिक्षित एवं कुशल विद्यार्थी होते हुए भी विवाह पश्चात अध्ययन पूर्ण नही करती, माता—पिता की अनुमती के बिना पलायन विवाह के चलते वह अपने घर कभी वापस न जा सकी। इधर नायक 'गिनेस' डॉक्टरी कार्य के चलते व्यस्त होने के कारण जया को उचीत समय नही दे पाता जिसके कारण दोनों मे दुरत्व के भाव उत्पन्न हो जाते है। जया अपने नीजि जिवन की व्यथा माता—पिता को कभी बता नही पाई कारण विवाहोपरांत उन्होने जया से पूर्णत: संबंध विच्छेद कर लिए थे। 'विवाह' शब्द के जिस आकर्षण से जया परिवार से दूर हो जाती है विवाहोपरांत वह आकर्षण क्षण प्रतिक्षण टूटने से वह मानसिक रूप से आहत हो जाती है। वह सोचती है,'पति की हॉ मे हॉ और ना मे ना मिलाना आसान ही होता होगा, तभी करोडो लोग शादी करते है और सुखी रहते है, मेरे लिए शादी की यह सीधी—सादी वर्णमाला कितनी कठिण पड़ने लगी थी।'[१]

महिलाओं की सुरक्षीतता की समस्या —

'जया' जब शिक्षाध्ययन के उद्देश्य से दिल्ली अपने पिता के पहचान के अंकल आंटी के पास रहने जाती है तो एक रात अंकल द्वारा अचानक हुए उसपर शारीरिक हमले से वह पूर्णत: सिहर जाती है। परिस्थिती के अनुसार अंकल शारीरिक क्षती तो नही पहुचा पाते है परंतू स्त्री मन की कुंठा को व्यक्त न कर पाने से जया अंदरूनी तौर पर बुरी तरह बिखर जाती है। ऐसे में पुरूषो के प्रती 'जया' का दृष्टकोण ही बदलते हुए वह विचारकरती है की, 'इस क्षण मुझे लग रहा था कि शायद अब ताउम्र मैं प्यार के काबिल नही रहुँगी या शायद मर्द प्यार के काबिल नही होते।'[२]

परिवार द्वारा तय किए गए विवाह की समस्या—

'प्रेम कहानी' उपन्यास मे प्रेम विवाह एवं परिवार द्वारा तय किए गए विवाह जैसे दोनों ही प्रकार दर्शाए है और दोनो प्रकार के विवाह मे उत्पन्न भिन्न—भिन्न प्रकार की समस्याएँ दर्शाई है। जया की सहेली यशस्विनी उर्फ यशा कॉलेज मे पढते समय अपने सहेली फरीदा के भाई मुहम्मद से पत्र द्वारा ही प्रेम कर बैठती है और उसी से विवाह की कल्पना करती है परंतु पारिवारीक दबाव के चल्ते वह एक लोहे के व्यापारी से ब्याही जाती है। घर के अन लोहे के दरवाजों में वह स्वयं को सदैव कैद में पाती है। गर्भवती होने पर स्वयं को घृणित दृष्टि से देखते हुए आत्महत्या की

कल्पना भी करती है। जिसे देख जया विचार करने लगती है, 'यह कैसा रिश्ता है, जहॉ न मन मिले है न मस्तिष्क, केवल जिस्म के स्तर पर जीवन चलता है। माता–पिता कन्यादान ऐसे कर देते है, जैसे गऊदान।'[३]

व्यवसाय की अनितीयॉ–

उपन्यास में मुख्यत: डॉक्टरी के पेशे से जुडे लोगों का वर्णन किया गया है। नायक 'गिनेस' डॉक्टरी पढकर दिल्ली में प्रैक्टिस करने प्रो. डॉ. गुप्ता के यहॉ आया था जो अपने डॉक्टरी पेशे को पूर्णत: व्यापार में तब्दील कर देता है। जहॉ गरीब व्यक्ती को हाथ लगाने से भी कतराते है और अमीर व्यक्ती के घर जाकर विजिट देकर आते हैं। बच्चों के लिए डॉ. गुप्ता जादूगर थे, वे मुख्यत: बच्चों की चिकित्सा करते और हाथ लगाने भर से बच्चे स्वस्थ हो जाते। ऐसे में गरीब मॉ–बाप दो समय का भोजन न खाकर पहले डॉ. गुप्ता यहॉ की फिस का बन्दोबस्त करते परंतु डॉ. गुप्ता यहॉ भी उनकी लाचारी का फायदा उठाते हुए उनसे दुगुना रक्कम वसूल करते है जिसे देख 'गिनेस' कहता, 'काश गरीबी दूर करने की भी कोई टिकिया आती,'..... [४]

कालाबाजारी के विघातक परिणाम –

डॉ. गुप्ता द्वारा किए गए अपने मरिजो के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार के चलते उसका भुगतान उनके दानों बच्चों को उठाना पडता है। दवाखाने में जब मार्तंड नाम का एक दुकानदार अपने बच्चे के इलाज के लिए आता है तो डॉ. गुप्ता बच्चे को ऍक्सिडेंट केस बताकर पुल्सि कार्यवाही का हवाला देकर भिजवा देता है। बच्चा उन्ही के सिढियों पर जान गवा देता है, जिसका बदला लेने के लिए शिमला में पढ रहे डॉ. गुप्ता के दोनों बच्चों की हत्या कर उसे सबक सिखाता है, जिसमें निहायता दोनों बच्चे बिना गलती के मारे जाते है। मार्तंड स्वयं पर बिते कष्टों का अनुभव डॉ. गुप्ता को करने के लिए दो बिना कुसुरवार प्राणों की हत्या कर देता है।

निष्कर्ष –

साहित्य सृजन द्वारा प्रत्येक साहित्यकार अपनी कृतियों द्वारा समाज कल्याण के महत्वपूर्ण घटक अवश्य परिलक्षीत करवाते है। साहित्य का मूल उद्देश्य ही होता है समाज मे नीहित समस्याओं का आकलन एवं उनका निराकरण, अपीन कृतियों के माध्यम से साहित्यकार समाज में मानसिक विचारों का शुद्धिकरण कर व्यवहारिक रूप से सुदृढ एवं व्यवस्थित समाज की निर्मिती के उद्देश से अपने प्रत्येक कथावस्तु में उज्ज्वल भविष्य की संभावनाऍ प्रस्तुत करते है तथा कुरीतियों का खंडन कर पुरानी प्रथा परंपराओं से विमुख होने का मार्ग प्रशस्त करते है।

'प्रेम कहानी' उपन्यास में जिन समस्याओं कोअंकित किया गया है। वे समस्याऍ वर्तमान में हर क्षेत्र में देखी जाती है। पाश्चात्य सभ्यता के प्रभावस्वरूप प्रेम विवाह का प्रतिशत अधिक बढ गया है। माता–पिता द्वारा उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए विश्वास के साथ भेजे गये येछात्र–छात्राऍ कम उम्र में ही विवाह कर अपनी शिक्षा को तिलांजली देते है जिससे आगे चलाकर उन्हे पुन: शिक्षाग्रहण करने एवं

नौकरी प्राप्त करने मे असुविधा उत्पन्न होती है। साथ ही बढती उम्र में प्रेम का स्वरूप बदलकर केवल आकर्षण का भाव रह जाने से दाम्पत्य जीवन अव्यवस्थीत हो जाती है जिससे विवाह विच्छेद के परिणाम अधिक बढ जाती है। वही परिवार द्वारा दबाव स्वरुप में करवाया गया विवाह भी केवल शारीरिक रुप से आबद्ध रह जाते है उनमें प्रेम के अभाव के कारण भी विवाह विच्छेद या आत्महत्या का कारण भी बन जाता है। इसीलए विवाह मे जल्दबाजी या दबाव का स्वरुप न रखते हुए सरकार द्वारा हाल ही में पारित नियम अनुसार विवाह की आयुसिमा न्युनतम इक्कीस ही होनी चाहिए। इस अवस्था तक आते—आते युवक युवतियॉ मानसिक रुप से परिपक्व हो जाते है। जिससे विवाह योग्य फैसले वे अपनी समझदारी सेले सके। इससे प्रेम या तय किए गए विवाह में आबद्ध युवक युवतियों मे तलाक या आत्महत्या के परिणामों को रोका जा सकता है।

म्मता कालिया जी ने अपने अनेकउपन्यास एवं कहानियों में महिलाओं की सुरक्षा एवं उनके सबीलकरण को बढावा देने के उद्देश्य से कई प्रकार के सुझावो के साथ मार्ग भी प्रशस्त करवाए है। प्रस्तुत उपन्यास में ही उन्होने नायिका जया द्वारा स्पष्ट किया है की जब अंकल उसपर अनैतिक व्यवहार करते है तो वह बिना माता—पिता के जवाब की अपेक्षा किए तुरंत उनके याहॉ से हॅस्टोल में चली जाती है। एक स्त्री व्यवहार की कृतज्ञता के कारण वह आंटी को खुलकर उसके साथ हुए व्यवहार को बता नही पाती परंतु यदि वह उसी क्षण आंटी को कह देती तो वह कुमार्ग पर चला अंकल भविष्य में अन्य किसी के साथ ऐसा व्यवहार करने का विचार भी न कर पाता, यहॉ लेखिका स्वयं स्त्रियोचित व्यवहार का शिकार होते हुए देखी गई है।

समाज को कालाबाजारी एवं घुसखोरी जैसे अनैतिक बातों से दुर रहना चाहिए यह प्रत्येक सभ्य समाज की मॉग होती है, परंतु फीर भी कुछ ऐसे पुरुष एवं महिलाऍ आज भी समाज को दुषित कर रहे है इस ओर ममता जी ने सतर्क करते हुए इसके दुष्परिणामों की ओर इंगित किया है। डॉ. गुप्ता के माध्यम से उन्होने कालाबाजारी की कडी निंदा करते हुए डॉक्टरी जैसे पेशे मे हो रहे गैरकानुनी कार्यवाही की ओर भी कड़ा प्रतिवाद किया है एवं 'गिनेस' के माध्यम से उदात्त गुणों वाले व्यक्तियों का भी चरित्र चित्रण प्रस्तुत किया है। जिससे समाज में अधिक से अधिक नैतिक गुणों का विकास किया जा सके।

संदर्भ :—

तीन लघु उपन्यास 'प्रेम कहानी', ममता कालिया, पृ.सं. १९५ किताबघर प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली—११०००२ प्रसं.२०२०

तीन लघु उपन्यास 'प्रेम कहानी' पृ. सं. १२३ किताबघर प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली—११०००२ प्रसं.२०२०

तीन लघु उपन्यास 'प्रेम कहानी' पृ. सं. १८४ किताबघर प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली—११०००२ प्रसं.२०२०

तीन लघु उपन्यास 'प्रेम कहानी' पृ. सं. १६३ किताबघर प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली—११०००२ प्रसं.२०२०

ममता कलिया की कहानियॉ (खंड १) ममता कालियावणी प्रकाशन, नई दिल्ली — ११०००२ प्र. सं. —२००५

ममता कलिया की कहानियॉ (खंड २) ममता कालियावणी प्रकाशन, नई दिल्ली — ११०००२ प्र. सं. —२००६

डॉ. फैमिदा बीजापुरे विनय प्रकाशन, कानपुर प्र. सं. २००५